राज्य के कार्य
(Functions of State)

व्यक्तिवादी सिद्धान्त के अनुसार राज्य को व्यक्ति के कार्यों में कम से कम दखल देना चाहिए। इस मत के अनुसार राज्य के प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं: (अ) बाह्य आक्रमण से रक्षा करना। (ब) आन्तरिक शान्ति कायम करना। (स) वैध समझौते के भंग किये जाने से व्यक्ति की रक्षा करना। (द) रोगियों, निर्बलों तथा दीनों की रक्षा करना। (य) डाकुओं से रक्षा करना। (र) छूत जैसी बीमारियों से रक्षा करना आदि।

आदर्शवादी या विज्ञानवादी सिद्धान्त के अन्तर्गत राज्य का मुख्य कार्य मानव जीवन को सुखमय बनाना है। व्यक्ति की उन्नति के लिए सभी सुविधाएं देना राज्य का कर्त्तव्य है। राज्य भौतिक सुविधाएं दे तथा व्यक्ति के नैतिक विकास में सहायता करे। नैतिक विकास में राज्य व्यक्ति की कठिनाइयों को दूर करे। राज्य का कार्य मानवीय स्वतन्त्रता की प्राप्ति को सुनिश्चित करना है।

---

1. "The State is the product and mainifestation of the irreconciliability of class antogonism."— Lenin.

समाजवादी विचारधारा के अन्तर्गत राज्य का प्रमुख कार्य पूंजीवाद की विसंगतियों, विरोधाभासों और बुराइयों का निराकरण करना है तथा आर्थिक समानता की स्थापना करना है। राज्य का प्रमुख कार्य दलितों, मजदूरों, शोषितों एवं निर्बलों का कल्याण एवं उत्थान करना है। राज्य का एक अन्य प्रमुख कार्य उत्पादन के साधनों और वितरण व्यवस्था पर से पूँजीपतियों के एकाधिकार को समाप्त करना तथा अर्थव्यवस्था को संतुलित एवं नियंत्रित करना है।

उपयोगितावादी विचारधारा के अन्तर्गत राज्य का कार्य अधिकतम संख्या में अधिकतम व्यक्तियों के सुख को सुनिश्चित करना है। अपनी जनता को सुखमय जीवन जीने के लिए अवसर प्रदान करना राज्य का प्रमुख कर्त्तव्य है। इस मत के अन्तर्गत कल्याणकारी राज्य की अवधारणा का समर्थन किया गया है।

गांधीवादी विचारधारा के अन्तर्गत सत्य और अहिंसा की महत्ता को स्थापित किया गया है। राज्य का प्रमुख कार्य इसी सिद्धान्त के आधार पर जन कल्याण करना है। आर्थिक विकांस के लिए लघु उद्योग-धन्धों को महत्व देना। सर्वोदय का प्रयास करते हुए राज्य को सबके उत्थान के लिए प्रयास करना। राज्य को विकेन्द्रीकरण की नीति को अपनाना चाहिए।

कल्याणकारी राज्य के सिद्धान्त के अनुसार राज्य का कार्य जनहित है। राज्य की सुरक्षा, शान्ति व्यवस्था, न्याय, शिक्षा, चिकित्सा, दरिद्रता का निवारण, कला-साहित्य का विकास, विषमताओं को दूर करना, मनोरंजन के साधनों का विकास आदि राज्य के प्रमुख कार्य हैं। सर्वकल्याण की दृष्टि से राज्य कल्याणकारी कार्य करता है।

'समाज दर्शन की रूपरेखा' नामक अपनी पुस्तक में मैकेन्जी ने राज्य के प्रमुख कार्यों का उल्लेख निम्न प्रकार से किया है— (1) शक्ति के रूप में राज्य, (2) कानून निर्माता के रूप में राज्य, (3) परिवार के निर्माण और रक्षा के रूप में राज्य, (4) शिक्षक के रूप में राज्य, (5) नैतिकता के प्रचारक के रूप में राज्य। आधुनिक काल में राज्य का कार्य आन्तरिक सुरक्षा और बाह्य सुरक्षा की स्थापना के साथ-साथ अनेक सामाजिक सुरक्षा के कार्य करना भी है जैसे– बाढ़, अकाल या प्राकृतिक आपदा से रक्षा, कृषि व्यवस्था, शिक्षा और चिकित्सा का समुचित प्रबन्ध, रोग, महामारी आदि से सुरक्षा। वास्तव में जन कल्याण के जितने भी कार्य हैं, वे सभी राज्य के कार्य-क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।